بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 25 अक्तूबर 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

बनू क़ुरैज़ा नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 25.10.24
محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- बनू क़ुरैज़ा के समझौता तोड़ने पर अहज़ाब नामक युद्ध के बाद उनके क़िलों के घेराव किए जा रहे थे ताकि उन्हें मुसलमानों को हानि पहुंचाने तथा वादा तोड़ने पर दंडित किया जाए, इसका वर्णन चल रहा था। इसका और अधिक विवरण इस प्रकार है कि जब घेरा बन्दी का दबाव बढ़ गया तो बनू क़ुरैज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैसले पर क़िलों से नीचे उतर आए।

घेराव के बारे में पन्द्रह चौदह तथा पच्चीस दिन की विभिन्न रिवायतें हैं। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इतिहास के भिन्न भिन्न स्रोतों से निकाल कर इस घेराव की अवधि लगभग बीस दिन बयान की है। इस फ़ैसले में हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. को निर्णायक बनाया गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहूदियों को बन्दी बनाने के आदेश पर उनको रस्सियों से बांध दिया गया तथा महिलाओं एवं बच्चों को अलग कर दिया गया। उनके क़िलों से पन्द्रह सौ तलवारें, तीन सौ युद्ध

कवच, दो हज़ार भाले, पन्द्रह सौ चमड़े की ढालें तथा बहुत से बर्तन मिले। ऊँट तथा अन्य पशु भी पाए गए जो सब के सब जमा कर लिए गए। औस नामक क़बीले के आदरणीय लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि बनू क़ुरैज़ा हमारे दोस्त हैं, आप स. उनको हमारे लिए क्षमा कर दीजिए। उनके अनुरोध पर आप स. ने फ़रमाया कि क्या तुम इस बात पर ख़ुश हो कि उनके बारे में फ़ैसला तुममें से ही

एक व्यक्ति के हवाले कर दिया जाए? उनके क़बूल करने पर यह मामला हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. के हवाले कर दिया गया। एक अन्य रिवायत के अनुसार आप स. ने फ़रमाया कि मेरे सहाबियों में से जिसको चाहो अपना निर्णायक बना लो, तो उन्होंने हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. को बना लिया। हज़रत सअद रज़ी. औस क़बीले के रईस थे तथा बनू क़ुरैज़ा के दोस्त थे इसलिए उनका विचार था कि मामला हमारे हाथ में है तथा अरब की प्रथानुसार हज़रत सअद रज़ी. अपने दोस्त क़बीले के लिए नर्मी करेंगे किन्तु हज़रत सअद रज़ी. का पवित्र एवं निष्ठावान हृदय ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ही सब रिशतों तथा सम्बंधों पर प्राथ्मिकता दिए हुए थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. इसके बारे में लिखते हैं कि औस नामक क़बीले के कुछ लोगों ने हज़रत सअद रज़ी. से अनुरोध किया कि क़ुरैज़ा क़बीले के लोग हमारे दोस्त हैं, जिस प्रकार ख़िज़रज ने अपने दोस्त क़बीले बनू क़ैनक़ाअ के साथ उदारता दिखाई थी, तुम भी बनू क़ुरैज़ा से उदारता पूर्वक व्यवहार करना तथा उन्हें कठोर दंड न देना।। सअद बिन मुआज़ रज़ी. पहले तो चुपचाप उनकी बातें सुनते रहे परन्तु उनके अधिक आग्रह पर कहा कि यह वह समय है कि सअद इस समय सत्य एवं न्याय के मामले में किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से विचलित नहीं हो सकता। यह जवाब सुनकर लोग ख़ामोश हो गए।

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. ने दोनों ओर से अपने निर्णय को स्वीकार करने के वादे एवं निश्चय के बाद अपना निर्णय सुनाया कि बनू क़ुरैज़ा के हत्यारे अर्थात यौद्धाओं का वध कर दिया जाए तथा उनकी महिलाएँ एवं बच्चे क़ैद कर लिए जाएँ तथा उनकी सम्पदा मुसलमानों में बाँट दी जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निर्णय सुना तो तुरन्त बोल उठे-

لَقَدْ حَكَمْتَ بِحُكْمِ اللهِ अर्थात- तुम्हारा यह निर्णय ख़ुदाई विधान है।

इन शब्दों से आप स. का अभिप्रायः यह था कि बनू क़ुरैज़ा के विषय में इस निर्णय पर स्पष्ट रूप से ख़ुदा का हाथ काम करता हुआ दिखाई देता है तथा इस कारण से आप स. की दयावान भावना उसको रोक नहीं सकती। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ी.

के फ़ैसले के बारे में फ़रमाया कि इसी निर्णय के बारे में मुझे फ़रिश्ते ने सहरी के समय बताया था। हज़रत सअद रज़ी. के फ़ैसले के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 9 जुलहिज्जा तथा एक रिवायत के अनुसार 7 जुलहिज्जा, जुमेरात के दिन मदीना वापस तशरीफ़ लाए। आप स. के आदेशानुसार बन्दियों को मदीना में हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. के घर, महिलाओं तथा बच्चों को हज़रत रमला सुपुत्री हारिस के घर लाया गया और सहाबियों ने बनु क़ुरैज़ा के खाने के लिए ढेरों ढेर फल लाकर रख दिए और लिखा है कि यहूदी लोग रात भर फल खाने में व्यस्त रहे। हज़रत सअद रज़ी. के इस निर्णय पर कुछ आपत्ति करने वाले लोग, तथा कई बार हमारे युवाओं को भी यह कह कर उनमें विष भरते हैं कि बन् क़ुरैज़ा पर आप स. ने अत्याचार किया। इसका एक अति स्पष्ट उत्तर है कि यह फ़ैसला आप स. ने तो किया ही नहीं था, बल्कि अल्लाह तआला ने यह फ़ैसला उनके दोस्त से करवाया तथा उसमें भी आप स. से पक्का वादा लिया गया।

इस अवसर पर आप स. ने ये आकांक्षा भरे शब्द फ़रमाए कि- لَوْ اٰمَنَ بِیْ عَشَرَۃٌ مِنَ الْیَھُوْدِ لَاٰمَنَتْ بِیَ الْیَھُوْدُ अर्थात- यदि यहूदियों में से दस प्रतिष्ठित लोग भी ईमान ले आते तो मैं ख़ुदा से आशा रखता था कि यह पूरी क़ौम मुझे स्वीकार कर लेती तथा ख़ुदा के प्रकोप से बच जाती।

दूसरे दिन सुबह को हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. का निर्णय जारी होना था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं भी निकट के ही एक स्थान पर बैठ गए ताकि यदि फ़ैसले के जारी होने के समय कोई बात ऐसी पैदा हो जिसमें आप स. के निर्देश की आवश्यकता हो तो आप स. तुरन्त मार्ग दर्शन कर सकें। यद्यपि हज़रत सअद रज़ी. के फ़ैसले की अपील न्यायिक रंग में आप स. के सामने पेश नहीं हो सकती थी परन्तु एक बादशाह अथवा लोकतांत्रिक अध्यक्ष एवं राष्ट्रपति के रूप में आप स. किसी व्यक्ति विशेष के सम्बंध में दया याचिका अवश्य सुन सकते थे।

आप स. ने दया की भावना के साथ यह आदेश भी पारित किया कि दोषियों को एक एक करके अलग अलग मारा जाए अर्थात एक की हत्या के समय दूसरे दोषी उसके पास न हों। जब ह्यी बिन अख़तब नामक सरदार बनू नज़ीर के क़बीले की ओर आया तो आप स. की ओर देख कर कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), मुझे यह दुःख नहीं है कि मैंने तुम्हारा विरोध क्यूँ किया, परन्तु बात यह है कि जो ख़ुदा को छोडता है, ख़ुदा भी उसे छोड़ देता है, यह उसी का आदेश एवं विधान है। इसी तरह कअब बिन असद रईसे क़ुरैज़ा को जब हत्या के स्थान पर लाया गया तो आप स. ने उसे संकेत दिया कि मुसलमान हो जाए। उसने कहा- ऐ अबू क़ासिम, मैं मुसलमान तो हा जाता, परन्तु लोग कहेंगे कि मौत से डर गया, अतएव मुझे यहूदी धर्म पर ही मरने दो।

इस युद्ध के द्वारा जमा होने वाले माले ग़नीमत (युद्ध विजय होने की अवस्था में हाथ आई धन,सम्पत्ति) को भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों में वितरित कर दिया तथा कुछ महिलाओं को भी इसमें से अंश दिया गया। बन्दियों के विषय में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने विभिन्न इतिहास की पुस्तकों में से बड़े अनुसंधान के बाद लिखा है कि कुछ रिवायतों से पता लगता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको नजद नामक स्थान की ओर भिजवा दिया था जहाँ कुछ नजदी क़बीलों ने उनके बदले कुछ धन राशि देकर उन्हें छुड़ा लिया था तथा इस धन राशि से मुसलमानों ने अपनी लड़ाई की आवश्यकताओं के लिए घोड़े तथा हथ्यिार ख़रीदे थे। यदि ऐसा हुआ हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्यूँकि नजदी क़बीले तथा बनू क़ुरैज़ा आपस में दोस्त थे परन्तु सही रिवायतों से पता चलता है कि ये क़ैदी मदीना में ही रहे थे तथा आप स. ने उन्हें अरब की प्रथानुसार विभिन्न सहाबियों में बांट दिया था। उनमें से कुछ लोगों ने अपनी स्वतंत्रता के लिए धन राशि देकर रिहाई प्राप्त कर ली थी तथा कुछ लोगों को आप स. ने यूँ ही उपकार की भावना से छोड़ दिया था। ये लोग बाद में धीरे धीरे स्वइच्छा से स्वय मुसलमान हो गए।

इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ऐसा आदेश दिया जो आप स. की विराट दयापूर्ण भावना तथा महिलाओं के उपकारक के रूप में स्वर्ण जल से लिखने योग्य है। आप स. ने फ़रमाया कि जो भी कोई महिला किसी को दी जाए अथवा बेची जाए यदि उसके साथ छोटा बच्चा अथवा बच्ची हो तो उसको उसकी माँ से अलग न किया जाए जब तक कि वह व्यस्क न हो जाए और ऐसा ही यदि दो छोटी बहिनें हों तो उन्हें भी व्यस्क होने तक जुदा न किया जाए। यह था रहमतुल्लिल आलमीन का अमल और आप स. का महिलाओं, क़ैदियों तथा अपने विरोधियों पर उपकार, और आजकल मुसमलानों का क्या हाल है कि अल्लाह और रसूल स. के नाम पर लोगों को घरों से बेघर कर रहे हैं, निकाल रहे हैं, हत्या कर रहे हैं और फिर परिणाम यही निकल रहा है कि मुसलमानों का अपना मान सम्मान समाप्त हो रहा है। अल्लाह तआला इन मुसलमानों को भी बुद्धि एवं समझ अता फ़रमाए। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131